“जाग उठो नारी”

प्रिया देवांगन

धरा नवल निर्माण करो तुम, साहस सब से है भारी।
कदम बढ़ा कर आगे आओ, जाग उठो तुम हे नारी।।

बीत गयी वो काली रातें, अश्रु नीर जब पीते थे।
घूंॅघट की चाहरदीवारी,जहँ बेबस हो जीते थे।।
त्याग दया ममता की मूरत, देवी की वो अवतारी।
कदम बढ़ा कर आगे आओ, जाग उठो तुम हे नारी।।

छोड़ चलो कंटक राहों को,आशा किरण जगाना है।
स्वर्णिम युग की आभा बनकर, आसमान छू जाना है।।
स्पर्श नहीं कर पाये पापी, बनो आग के अंगारे।
टूट पड़ो बन मेघ दामिनी, देख सभी दुश्मन हारे।।

तुम से चलती सारी दुनिया, सरस्वती लक्ष्मी सीता।
सत्य राह दिखलाने वाली, तुम रामायण अरु गीता।।
वक्त पड़े गर झाँसी रानी, कलयुग की वो झलकारी।
कदम बढ़ा कर आगे आओ, जाग उठो तुम हे नारी।।